शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

रणबीर सिंह बिष्ट–एक भारतीय प्रभाववादी कलाकार

प्राप्तिः 27.02.2025
स्वीकृतः 20.03.2025

9

निधि
शोध छात्रा, (चित्रकला विभाग)
मेरठ कॉलिज, मेरठ।
ईमेलः Knidhi2831992@gmail.com

डॉ0 अमृतलाल
शोध निर्देशक,
अध्यक्ष (चित्रकला विभाग)
मेरठ कॉलिज, मेरठ।

सारांश

यह सार्वभौम सत्य है कि धनिष्ठ क्षमता, आशा एवं सहज भाव के साथ कड़ी मेहनत करने वाला प्रत्येक कलाकार उँचाइयों को छुता है और स्वयं के अस्तित्व की गरिमा को प्रमाणित करता है। इसी विलक्षण प्रतिभा के धनी, नरम स्वभाव तथा पहाड़ों के आँचल में पले–बढ़े प्रसिद्ध भारतीय कलाकार 'रणबीर सिंह बिष्ट', जिन्होंने लगातार कलात्मक जीवन को जिया और अपने अन्दर के रंगाकन से कैनवास को भवनात्मक व अनोखी कलात्मकता से बांधा है। रणबीर सिंह बिष्ट में सहज अभिव्यक्ति गतिशीलता और सस्थिरता दोनों विधमान है।

मूल शब्द

सार्वभौम्य, घनिष्ठ, सहज, अस्तित्व, विलक्षण, कलात्मक, रंगाकन, भवनात्मक, अभिव्यक्ति, स्थिरता।

प्रस्तावना

रणवीर सिंह बिष्ट भारत के सायरा चित्रकार के रूप में अपना जीवन प्रारंभ करने वाले समकालीन कलाकार रणवीर सिंह बिष्ट देश के उन कलाकारों में से हैं जिन्होंने कला यात्रा में विभिन्न पड़ाव के बावजूद आगे बढ़ते रहे। रणवीर सिंह के जीवन में ऐसा नहीं है कि सेरा चित्र के अलावा जीवन में और कुछ नहीं किया परंतु सबसे ज्यादा माटी की गंध ने ही उन्हें अभिभूत किया है। बचपन से ही इस मिट्टी के गंद से इतना इतने रहा कि उसे झूठ लाना असंभव था। शायद यही कारण है कि उनका मन तेरा चित्र में लगा और यही सारा चित्र ही उनकी पहचान चित्रकार के रूप में कराई। 4 अक्टूबर 1928 को जन्मे रणवीर सिंह की कला का यात्रा उनके लैंसडाउन के घर से ही शुरू होती है। हिमालय की वादियां बर्फीली चोटियां छोटे–छोटे उड़ते बादल झर झर झर के झरने अनोखी सुबह एवं खूबसूरत शामें एवं घर मौसम में प्राकृतिक का बदलता अपना रंग और आसपास का वातावरण उनके मन में ऐसा घर कर गया उपरोक्त के साथ–साथ सबसे ज्यादा उनको प्रभावित किया लैंसडाउन में रह रहे आगे परिवारी ने क्योंकि इन लोगों के परिवार में प्रतिदिन दीवार पर चित्रांकन किया करते थे जिसे देख रणवीर उत्सुकता से चित्रांकन करने में उत्साहित होने लगे। इस उत्साह

ने ही बालक रणबीर के मन पटल पर कला प्रवृत्ति को उजागर किया एवं पहाड़ी के हसीन वादियों से गुजरते स्कूल की ओर आते जाते चट्टाने उनके लिए पलक का काम देने लगी इनके घर से स्कूल की दूरी लगभग 3 किमी था परंतु इन पहाड़ों लीन ऐसे ही जाते कि पता ही नहीं चलता कि स्कूल पहुंच गए और विराट और चित्रकारी करते रहे धीरे–धीरे इनका मन चित्रकारी में ज्यादा और पढ़ाई में कम लगने लगा। इनका कला के प्रति रुझान देखकर कला अध्यापक के साथ–साथ अन्य अध्यापक भी प्रोत्साहित करने लगे। परंतु घरवाले चाहते थे कला के क्षेत्र में ना जाकर बल्कि सेना में भर्ती हो साथ ही इनके पिता श्री कल्याण सिंह बिष्ट की भी यही इच्छा थी। परंतु बालक रणवीर सिंह ने दृढ़ संकल्प ले लिए थे कि कलाकार ही बनना है और इसी चरित्र के कारण रणवीर को शक्ति मिली थी एवं आगे भी लेकर गया और विराम एक बार उन्होंने तय कर लिया तो फिर वह पूरा करके ही मानते थे।

इसी प्रकार मन में बसी माटी की गंध चित्रात्मक व्यक्तित्व के रंग आत्मक संबंध में बदल गई। समय के साथ उनका रूप बदलते रहे एवं कार्य करने का ढंग बदलता रहा परंतु कलाकार की भावना कभी कम नहीं हुई। स्थानी स्कूल से 1948 में हाईस्कूल पास करने के पश्चात कलाकार बनने की ललक ने उन्हें लखनऊ में आया पूरा लखनऊ कला महाविद्यालय में व्यवसाई कला महाविद्यालय में प्रवेश किया परंतु यहां उनको आनंद नहीं मिली जो वह चाहते थे। कला अध्यापक प्रशिक्षण कक्षाओं में चले आए और उसे पूरा करने के बाद ललित कला की कक्षाओं में प्रवेश लिया जिसको उन्होंने 1954 में पूरा किया। यह बात और था जब भारत में बंगाल स्कूल का वर्चस्व रहा। और वहीं का प्रभाव लखनऊ में भी ज्यादा रहा प्रोग्राम जिसमें वाश पद्धति में कार्य होता था रेखाओं पर विशेष महत्व दिया जाता था। विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाचार्य ने इस अध्यक्ष को धीरे– धीरे बदल रहे थे। सेन अपने सैरा चित्रों में प्रकाश छाया हार्ड लाइट का सुंदर प्रयोग करना शुरू किया पूरा स्वभाविक है इनका प्रभाव इन के छात्रों पर पड़ा होगा। परंतु पर उनके सीनियर साथियों का प्रभाव ज्यादा पड़ा। जिनमें फेंक बेसिली को वह ज्यादा मानते थे।

बेसिली एक सशक्त लैंडस्केप कलाकार फूलपुर बाजार एवं उनके कार्य पर गहरा प्रभाव बानगांग रहा। बेसिली से प्रभावित व्हिच छात्रावास में रहते और जब भी दे बेसली कार्य करने जाते तो उनका कलर फ्लैट होने और बोर्ड पर पेपर बड़ी लगन के साथ लगाते थे वह दिखाओ आज की बात करें तो ऐसा कोई विद्यार्थी नहीं करता परंतु विश्व के सीखने की ललक से ऐसा किया करते थे 4 ग्राम इस समय तक विश्व अपने चेहरा चित्रों के लिए अन्य छात्र–छात्राओं से प्रशंसा पाने लगे थे प्रोग्राम विश्व के चित्रों में रंगों की पारदर्शिता एवं उनके तूलिका घाट एवं स्थल विशेष का चित्रण किया करते थे।

सन 1954 में ललित कला अकादमी की स्थापना दिल्ली में होने के पश्चात पहली राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में विश्व का एस्से 3 चित्रों को शामिल किया गया और मेरा परंतु कला समीक्षक चौधरी ने उनके चित्रों की आलोचना की कलाकार ने इस आलोचना को बड़ी गहराई से चुनौती के रूप में लिया। और उन्होंने विश्व स्तर पर हो रहे कला धाराओं पर नजर डालना शुरू किया। किस तरह भारत के अलावा अनेक देशों के कलाकार कार्य कर रहे उनके कृतियों को देखा और समझा कोर्निरा विश्व के जीवन काल में यही एक समय था जहां से उन्होंने प्रयोगवादी दृष्टिकोण से कार्य करना शुरू किया और मेरा उनके सामने एक और चुनौती खड़ी थी कला शिक्षा पूरी होने के बाद जीवन यापन के लिए कुछ करना भी ठाकुर गिरा परंतु अजमेर और लखनऊ इन दोनों जगहों पर नौकरी का अवसर मिला लेकिन विश्व का मन अपनी जन्म भूमि के बाद कहीं लगा तो लखनऊ में

ही जिससे उनका रंग आत्मक संबंध बन चुका था। लखनऊ को ही अपना श्रेवरकर समझा और सूचना विभाग के कलाकार के रूप में कार्य करना शुरू किया कोर्गिरा जब सूचना विभाग में कार्य कर रहे थे उसके कुछ समय पहले ही लखनऊ कला महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में सुधीर रंजन खास्तगीर जी का नियुक्ति हुआ था उन्होंने विश्वविद्यालय के नए सिरे से पुनर्गठन करना शुरू किया लगभग 1 वर्श पश्चात विष्णु जी का नियुक्ति कला अध्यापक का शिक्षा विभाग में वर्श 1956 में हुआ। एक कलाकार को कला का वातावरण मिल जाए तो बहुत ही तरह बड़ता है जैसे मानव उसको बाद पानी समय–समय पर मिल जाता है ठीक वैसे ही विद्यालय में अध्यापन और घर पर अध्ययन रणबीर सिंह का जीवन शैली बन गया। उनके कार्य करने की धुन में विद्यालय से अध्यापन के बाद वेद घंटों जंगलों में बूम बूम पर प्रयोग करते रहते। किस बात की चर्चा इसलिए की जा रही है कि कलाकार की जीवनशैली उसकी दिनचर्या कलाकार किशोर उसकी गतिविधियां उनके द्वारा कृत कृतित्व को जोड़ती है। और ऐसे ही कलाकार के मन को हम करीब से समझ सकते हैं।

स्व0 प्रोफेसर रणबीर सिंह बिष्ट उत्तराखण्ड की उन महान विभूतियों में शामिल हैं, जिन्होंने पहाड़ के दूर–दूराज के गाँवों से निकलकर अपने क्षेत्र में देश–विदेश में ख्याति अर्जित की है। लैंसडौन में सन् 1928 में जन्में प्रो0 रणबीर सिंह बिष्ट ने अपनी जादुई उंगलियों से कैनवास पर रंगों और रेखाओं का ऐसा संसार रचा कि भारत सरकार ने तो उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है, देश–विदेश में उन्होंने कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त किये और एक महान कलाकार के रूप में ख्याति अर्जित की।

प्रो0 रणबीर सिंह के जीवन का अधिकांश समय लखनऊ में बीता और लखनऊ में ही सन् 1998 में उनका निधन हुआ, लेकिन पहाड़ से वे जीवनभर जुड़े रहे, यही वजह है कि उनकी कलाकृतियों में पहाड़ की झलक हमेशा महसूस की जा सकती है। दरअसल, उनके चित्रों में नीला रंग पहाड़ का ही प्रतिनिधित्व करता है। नीले रंग के बिना उनका कोई चित्र पूरा नहीं होता। उत्तराखंड आंदोलन को वे अपने चित्रों के माध्यम से लोगों तक ले गये। उन्होंने उत्तराखण्ड आंदोलन पर चित्रों की एक पूरी सीरीज बनाई और जगह–जगह इन चित्रों की प्रदर्शनी लगाई। वे लखनऊ के अनेक महाविद्यालयों में प्रवक्ता और प्रधानाचार्य रहने के साथ ही लखनऊ विश्वविद्यालय में ललित कला संकाय के डीन भी रहे। वे देश–विदेश के विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में कला विषयक लेख भी लिखते रहे।

पहाड़ के इस महान कलाकार के व्यक्तित्व और कृतित्व को लोगों के सामने लाने का महती कार्य किया है डॉ0 नन्द किषोर ढौंडियाल ने। डॉ0 ढौंडियाल ने 'विश्रुत अमर चित्रकार प्रोफेसर रणबीर सिंह बिष्ट व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तक का लेखन और सम्पादन किया है। विनसर पब्लिशिंग कंपनी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के संयोजक के रूप में हीरा सिंह बिष्ट ने सहयोग किया है। पाँच भागों में विभाजित इस पुस्तक के पहले भाग में प्रो0 रणबीर सिंह के व्यक्तित्व और जीवन से सम्बन्धित विवरण है। दूसरे भाग में प्रो0 बिष्ट द्वारा लिखे गये लेखों को संकलित किया गया है। तीसरे भाग में उनकी कलाकृतियों पर समीक्षकों के विचार प्रस्तुत किये गये हैं, जबकि चौथे भाग में उनकी कला पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में अब तक किये गये शोधों की जानकारी दी गई है। पाँचवें भाग में प्रो0 बिष्ट के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक लेखकों द्वारा लिखे गये लेखों को संकलित किया गया है। पुस्तक के छठे और अंतिम भाग में प्रो0 बिष्ट द्वारा बनाये गये चित्र प्रकाशित किये गये हैं।

विनसर पब्लिशिंग कंपनी के कीर्ति नवानी का कहना है कि उनका प्रकाशन पहाड़ की विभूतियों पर लगातार पुस्तकें प्रकाशित करता रहा है। यह पुस्तक इसी कड़ी में एक और प्रयास है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस पुस्तक से पहाड़ के लोग पहाड़ की इस महान विभूति के रचना संसार से रूबरू हो सकेंगे। कीर्ति नवानी रणबीर सिंह बिष्ट एक ऐसे कलाकार है जिन्होंने भारतीय समकालीन प्रभाववादी कला में अपनी एक महत्वपूर्ण योगदान अर्पण किया है। अपनी आन्तरिक भावनाओं की त्रीव सीमाओं को बिष्ट ने वर्षों तक मूल्यांकनक कर परखा तथा बार–बार पुनरावर्तन के माध्यम से भली भाँति कलात्मक अभिव्यक्ति को समझने के पश्चात अपनी समकालीन प्रभाववादी कलाकृतियों को सृजित किया।

चित्रांकन में सुक्ष्म से सुक्ष्मतम अभिव्यंजना की यात्रा रणबीर सिंह बिष्ट की अंतयात्री है, जिसके माध्यम से उन्होंने अपने बाहर का अन्वेषण किया जिससे उल्लास और अवसाद के क्षणों को आंनद तथा यंत्रणा को, उत्कृष्ट, दिव्य अथवा सांसारिक बिंबो के अन्तर्गत पकड़ा जा सके। भारतीय समकालीन कला में वैसे तो अनेक कलाकारो ने अपनी अनेक कलाओं के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है किन्तु आर एस बिष्ट की कला का भारतीय कलात्मक दुनिया में अद्वितीय स्थान रहेगा। रणबीर सिंह बिष्ट और उनकी पत्नि विमला बिष्ट का घर उनकी कलाकृतियों का खजाना है। रणबीर सिंह बिष्ट ने अपनें चित्रो की कई प्रदर्शनियाँ भारत, अमेरिका, मिश्र, हंगरी, रूमानिया, पोलेण्ड, बुल्गारिया आदि देशो में आयोजित की। बिष्ट ने अधिकांश रंग सपाट तथा सादा उपयोगी किए है। इनके चित्र माउष्टेन–1 एवं माउष्टेन–2 जो तैल रंगो में बनाये गये चित्र है बहुत प्रसिद्ध है। इनके पिकनिक डे, सन्थाल परिवार आदि मानव जीवन के अनुशासनात्मक चित्र है। रणबीर सिंह बिष्ट मुख्य रूप से मूर्तिकार के रूप में जाने जाते है। रणबीर सिंह बिष्ट मुख्य रूप से मूर्तिकार के रूप में जाने जाते है। रणबीर सिंह बिष्ट उत्तर प्रदेश के नवोदित कलाकारों में प्रमुख कलाकार है जिन्होंने नई आस्था तथा नवीन कला प्रवृत्तियों को दिखाया है।

इस पृथ्वी पर आने के पश्चात वह प्रतिदिन के ऐन्द्रिय संसार में आ जाता है, अनगिनत विचारधाराओं द्वारा संचालित मानव के जीवन के तानों बानो में और यही रणबीर सिंह बिष्ट का सच्चा संसार है।

'ब्लू सीरीज' से रणबीर सिंह बिष्ट की एक अति सुन्दर एक्रैलिक पेंटिग, गढ़वाल हिमालय से प्रेरित रणबीर सिंह बिष्ट एक ऐसे कलाकार है जिन्होने भारतीय समकालीन प्रभाववादी कला मे अपनी एक महत्वपूर्ण योगदान अर्पण किया है। अपनी आन्तरिक भावनाओं की त्रीव सीमाओं को बिष्ट

ने वर्षों तक मूल्यांकनक कर परखा तथा बार–बार पुनरावर्तन के माध्यम से भली भाँति कलात्मक अभिव्यक्ति को समझने के पश्चात अपनी समकालीन प्रभाववादी कलाकृतियों को सृजित किया।

रणबीर सिंह बिष्ट द्वारा निर्मित कलाकृति

चित्रांकन मे सुक्ष्म सूक्ष्मतम अभिव्यंजना की यात्रा रणबीर सिंह बिष्ट की अंतयत्रिा है, जिसके माध्यम से उन्होने अपने बाहर का अन्वेशण किया जिससे उल्लास और अवसाद के क्षणों को आंनद तथा यंत्रणा को, उत्कृष्ट, दिव्य अथवा सांसारिक बिंबो के अन्तर्गत पकड़ा जा सके।

बौद्ध और समझ की उन्नति के साथ अधिकांश अभिव्यक्तियों मे सहजता, सीधासरल पैनापन तथा अद्वितीय उर्जा विराजमान हो जाती है सामान्यत इसके दर्शन नहीं होते। रणबीर सिंह बिष्ट का कहना है– कि, ''मेरे चित्रों में पिछले कई सालों से लोकोत्तर और रंग के धब्बों जैसे दूसरे उग्रतत्व धीरे–धीरे न्यूनतम चाक्षुष रूपांकरों मे तब्दील होते जा रहे है।''[1]

प्रसिद्ध भारतीय समकालीन प्रभाववादी कलाकार प्रो० आर एस बिष्ट ने कहा था, ''हमारे पास कला शिक्षा की दो सौ साल की अलग–अलग प्रणालियाँ है। यह किसी भी कला–शिक्षाविद के लिये एक चुनौती है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि अगंर हमें छात्रों को तैयार करना है, तो हमे उन्हे इस तरह से प्रशिक्षित करना होगा कि वे भावना को आत्मसात कर सके, जो न केवल समकालीन कला मे बल्कि विज्ञापन, ग्राफिक्स, मिट्टी के बर्तन, औधोगिक, कपड़ा, बुनाई आदि जैसे अन्य कला रूपो मे नई तकनीकी संस्कृति द्वारा उत्पन्न की जाएगी।[2]''

भारतीय समकालीन कला में वैसे तो अनेक कलाकारो ने अपनी अनेक कलाओं के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है किन्तु आर एस बिष्ट की कला का भारतीय कलात्मक दुनिया मे अद्वितीय स्थान रहेगा। रणबीर सिंह बिष्ट और उनकी पत्नि विमला बिष्ट का घर उनकी कलाकृतियों का खजाना है। रणबीर सिंह बिष्ट ने अपनें चित्रो की कई प्रदर्शनियाँ भारत, अमेरिका, मिश्र, हंगरी, रूमानिया, पोलेण्ड, बुल्गारिया आदि देशो मे आयोजित की। बिष्ट ने अधिकांश रंग सपाट तथा सादा उपयोगी किए है। इनके चित्र माउष्टेन–I एवं माउष्टेन–II जो तैल रंगों मे बनाये गये चित्र है बहुत प्रसिद्ध है।

इनके पिकनिक डे, सन्थाल परिवार आदि मानव जीवन के अनुशासनात्मक चित्र है। रणबीर सिंह बिष्ट मुख्य रूप से मूर्तिकार के रूप मे जाने जाते है। रणबीर सिंह बिष्ट उत्तर प्रदेश के नवोदित कलाकारों मे प्रमुख कलाकार है जिन्होंने नई आस्था तथा नवीन कला प्रवृत्तियों को दिखाया है।

संदर्भ

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप, डॉ0 रीता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012 पृ० सं०–362–363
2. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप, डॉ0 रीता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2012 पृ० सं०–373–374
3. https://www.artfourm.com/news/ram-kumar-1924-2018-238682/
4. http://atul-dodiya.com/
5. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप, डॉ0 रीता, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012 पृ० सं०–349–350–351
6. https://www.artbuzz.in/blogs/art-blog/indian-impressionists-indian-impressionist-paintings
7. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप, डॉ0 रीता, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012 पृ० सं०–360